



“ नटराज, नृत्यकला एवं प्रतिमा विज्ञान ” (एक वास्तुशास्त्रीय विश्लेषण)

डॉ रविन्द्र प्रसाद उनियाल

सहायक अध्यापक (ज्योतिष विद्याशाखा)

श्रीरघुनाथ कीर्ति परिसर, कै सं विश्वविद्यालय 462043

संपर्क- 9555588276

Dr.ravindra.uniyal@csu.co.in

सारांश

यह शोध पत्र भारतीय संस्कृति में भगवान शिव के नटराज स्वरूप, नृत्यकला और वास्तुशास्त्र के बीच के गहरे अंतर्संबंधों का विश्लेषण करता है। नटराज की प्रतिमा सृष्टि के पाँच मूलभूत तत्वों और क्रियाओं— सृजन, संरक्षण, विनाश, तिरोभाव (अज्ञानता का दमन) और अनुग्रह (मोक्ष) का प्रतिनिधित्व करती है। जो शिव के डमरू से निकले 14 माहेश्वर सूत्र ही संस्कृत व्याकरण और संसार की समस्त ध्वनियों का आधार हैं। यह शिव का 'आनंद तांडव' ब्रह्मांडीय ऊर्जा और लय का प्रतीक है, जो केवल मनोरंजन नहीं बल्कि सृष्टि के निरंतर चक्र को दर्शाता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार नटराज की प्रतिमा सकारात्मक ऊर्जा और संतुलन का प्रतीक है, जिसे भवन के उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) या मध्य भाग में रखना श्रेष्ठ माना गया है। प्रतिमा विज्ञान के अनुसार लेख में 'सकलाधिकार' और 'मयमतम्' जैसे ग्रंथों के आधार पर नटराज प्रतिमा के ताल-मान (दशताल) और विशिष्ट अंगों के माप-प्रमाण का विस्तृत विवरण दिया गया है। नटराज की प्रसिद्ध कांस्य मूर्तियों का विकास चोल काल (9वीं-11वीं शताब्दी) में हुआ, जिन्होंने 'लॉस्ट वैक्स' (लुप्त मोम) तकनीक को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया। प्रतिमा में प्रतीकात्मक आभूषण गंगा, बालचंद्र, व्याघ्र चर्म और साँपों का आभूषण के रूप में क्रमशः पवित्रता, समय, शक्ति और कुंडलिनी शक्ति के प्रतीक हैं। नई दिल्ली के 'भारत मंडपम्' में स्थापित 27 फीट ऊँची विश्व की सबसे विशाल नटराज प्रतिमा जो

प्राचीन शिल्प परंपरा और आधुनिक कला का मिलन है। व्यावहारिक निर्देश को प्रस्तुत करते हुये शोध पत्र में स्पष्ट किया गया है कि घर में नटराज प्रतिमा को कलात्मक सौंदर्य, शांति, गतिशीलता, और सकारात्मक ऊर्जा के प्रतीक के रूप में रखना चाहिए, ताकि वातावरण में सृजनात्मकता बनी रहे।

कूट शब्द

नृत्यकला, शिल्पकला, नटराज, प्रतिमा, वास्तुशास्त्र, प्रतीक, डमरू, सृष्टि, तांडव, नृत्य, सृजन, संहार, पुनर्निर्माण, ब्रह्मांडीय, लय, संतुलन, अपस्मर, अग्नि, चोल वंश, लुप्त मोम, कास्टिंग विधि, तमिलनाडु, चिदंबरम, राजवंश, नटेश्वर, रुद्र, संस्कृति, वैदिक, शासनकाल, शताब्दी।

भूमिका

भारतीय संस्कृति में नटराज, नृत्यकला एवं वास्तुशास्त्र का विशेष महत्व है। नटराज, जो कि भगवान शिव का एक स्वरूप है,¹ नटराज भारतीय नृत्यकला और शिल्पकला का अभिन्न हिस्सा है। नटराज की प्रतिमा न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह वास्तुशास्त्र और नृत्यकला से भी गहराई से जुड़ी हुई है। हम यहाँ इस शोधपत्र में नटराज की अवधारणा, नृत्यकला में उसकी भूमिका तथा वास्तुशास्त्र से उसके संबंधों का विश्लेषण करेंगे।

हिन्दू धर्म में, भगवान शिव का जन्म कैलास पर्वत पर हुआ था, जो कि हिमालय पर्वत की एक ऊंची चोटी है। भगवान शिव के जन्म का माना जाता है कि वह जल, आकाश, और पृथ्वी के संगम स्थल पर हुआ था और जिनका जन्म शक्ति और ज्ञान का प्रतीक है। शिव की प्राचीन उत्पत्ति: हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक शिव की मान्यता प्राचीन यानी वैदिक काल से जुड़ी है। वैदिक ग्रंथों में शिव के अग्रदूत रुद्र हैं, जो प्राकृतिक तत्वों, विशेष रूप से तूफान, गड़गड़ाहट और प्रकृति की देवीय शक्तियों से जुड़े देवता हैं। रुद्र प्रारंभ में एक उग्र और क्रोध के देवता थे², जो प्रकृति के विनाशकारी पहलुओं का प्रतीक माने गए हैं। शिव के डमरू से 14 महेश्वर सूत्र उत्पन्न हुए, जिन्हें संस्कृत ध्वनियों की मूलभूत ध्वनि व्यवस्था का आधार माना जाता है।³

नटराज का प्रतीकात्मक अर्थ- नटराज की प्रतिमा को पाँच प्रमुख तत्वों का प्रतिनिधित्व करने के लिए जाना जाता है -

1. वृषारूढं पुरारिं च नृतं वै चन्द्रशेखरम्।

मयमतम् भाग-2 प्रतिमा लक्षण अध्याय श्लोक -9

2. यजुर्वेद रुद्रासूक्त मंत्र -1

3. नृतावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।

उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धादिनेतद्विमर्शं शिवसूत्रजालम्॥

नंदिकेश्वर काशिका परिशिष्ट 2 श्लोक -1

1. **डमरू** - सृष्टि का प्रतीक
2. **अग्नि** - विनाश और पुनर्जन्म का प्रतीक
3. **अभय मुद्रा** - सुरक्षा और शांति का संकेत
4. **अपस्मर** - अज्ञानता का दमन
5. **नृत्य मुद्रा** - ब्रह्मांडीय लय और संतुलन का प्रतीक

शिव का तांडव नृत्य सृजन, संहार और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि नृत्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण तत्व है। नृत्य के देवता (नटराज) के रूप में शिव एक प्रतीक के रूप में, शिव नटराज एक शानदार आविष्कार है। यह एक ही छवि में शिव की ब्रह्मांड के निर्माता, संरक्षक⁴ और विध्वंसक की भूमिकाओं को जोड़ता है⁵ और समय के कभी न खत्म होने वाले चक्र की भारतीय अवधारणा को व्यक्त करता है। नटराज, हिंदू देवता शिव का वह रूप है जिसे वे ब्रह्मांडीय नर्तक के रूप में धारण करते हैं। नटराज की मूर्तियाँ, भारतीय कला में एक प्रतिष्ठित छवि हैं। नटराज की कला और नृत्य, भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहे हैं।

नृत्यकला में नटराज की भूमिका

भारतीय नृत्यकला में नटराज का विशेष स्थान है। भरतनाट्यम, कुचिपुडी, ओडिसी, कथक और अन्य नृत्य शैलियों में शिव तांडव की अवधारणा देखी जा सकती है। भरतनाट्यम में नटराज की मुद्रा और भाव-भंगिमाओं का विशेष रूप से अनुसरण किया जाता है। नटराज नृत्यकला का प्रेरणास्रोत है और इसकी मुद्राएँ तथा भंगिमाएँ नृत्य की सौंदर्यात्मकता को बढ़ाती हैं।

वास्तुशास्त्र में नटराज का प्रभाव

भगवान नटराज शिल्प के देवता भी हैं।⁶ वास्तुशास्त्र, जो कि भवन निर्माण की पारंपरिक भारतीय विद्या है, में नटराज की मूर्ति को विशेष स्थान प्राप्त है। वास्तुशास्त्र में नटराज की मूर्ति को सकारात्मक ऊर्जा, संतुलन और सौंदर्यशास्त्र का प्रतीक माना जाता है। निम्नलिखित बिंदु इस प्रभाव को स्पष्ट करते हैं:

1. **ऊर्जा संतुलन** - नटराज की प्रतिमा को भवन के उत्तर-पूर्व या मध्य भाग में रखने से ऊर्जा संतुलन बना रहता है।
2. **सृजन और सौंदर्य** - नटराज की आकृति स्थापत्य कला और मंदिर निर्माण में सौंदर्य और सृजनात्मकता को प्रेरित करती है। वे प्रकृति के संरक्षक, वृक्ष और औषधियों के देवता हैं⁷

4. यजुर्वेद रुद्रासूक्त मंत्र -17

5. यजुर्वेद रुद्रासूक्त मंत्र -5

6. यजुर्वेद रुद्रासूक्त मंत्र -27

7. यजुर्वेद रुद्रासूक्त मंत्र -19

3. **धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रभाव** - मंदिरों और नृत्य हॉलों में नटराज की प्रतिमा स्थापित करने से वातावरण में पवित्रता और आध्यात्मिकता बनी रहती है।

नटराज की कला और नृत्य मुद्रा -

नटराज की मूर्ति में शिव को गतिशील और नाटकीय मुद्रा में दिखाया गया है। नटराज की मूर्ति में शिव के बाल लंबे और उलझे हुए हैं। नटराज की मूर्ति में शिव के सिर के ऊपर पंखे के आकार में फैले बाल हैं। नटराज की मूर्ति में शिव के सिर के किनारे, बालों की और लट्टें छोटी-छोटी फूलों से भरी हुई हैं। नटराज की मूर्ति में शिव के ऊपरी दाहिने हाथ में डमरू है। नटराज की मूर्ति में शिव के ऊपरी बाएँ हाथ में एक छोटी सी अग्नि लौ है। नटराज की मूर्ति में शिव के पैरों के नीचे अपस्मरा नाम का राक्षस है। नटराज की मूर्ति में शिव को पूरी तरह से संतुलित दिखाया गया है। नटराज से प्रेरणा लेने वाले भारतीय शास्त्रीय नृत्य: भरतनाट्यम, ओडिसी, कुचिपुड़ी, कथक आदि।

नटराज आध्यात्मिक और दार्शनिक प्रतीक - हिंदू धर्म में, नटराज कभी न खत्म होने वाले ब्रह्मांडीय नृत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहाँ सृजन और विनाश लगातार एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। आनंद तांडव (आनंद का नृत्य) नामक यह नृत्य ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाली दिव्य शक्ति का प्रतीक है। नटराज शिवजी का एक नाम है उस रूप में जिस में वह सबसे उत्तम नर्तक हैं। नटराज शिव का स्वरूप न सिर्फ उनके संपूर्ण काल एवं स्थान को ही दर्शाता है; अपितु यह भी बिना किसी संशय स्थापित करता है कि ब्रह्माण्ड में स्थित सारा जीवन, उनकी गति कंपन तथा ब्रह्माण्ड से परे शून्य की निःशब्दता सभी कुछ एक शिव में ही निहित है।⁸

शिव के नटराज अवतार का प्रसंग -

लेकिन भगवान शिव ने अपने तर्क से उन सभी साधुओं की बात को गलत साबित कर दिया, जिससे वे सब क्रोधित हो गए और भगवान शिव को दंडित करने की योजना बनाई। यह देखकर भगवान शिव ने एक अनोखा रूप धारण कर लिया। भगवान शिव नृत्य मुद्रा में आए और राक्षस व सांपों का वध कर दिया। शिव के इसी रूप को नटराज कहा जाता है।

नटराज मूर्ति का काल इतिहास :

नटराज की मूर्ति की उत्पत्ति 5वीं शताब्दी में हुई थी। यह मूर्ति, भगवान शिव को ब्रह्मांडीय नर्तक के रूप में दर्शाती है। नटराज की मूर्ति, दक्षिण भारत के कई शैव मंदिरों में देखी जा सकती है। नटराज की मूर्ति चोल काल की है। चोल वंश के शासनकाल (9वीं से 11वीं शताब्दी) में नटराज की मूर्ति का विकास हुआ। चोलों ने नटराज की मूर्ति के ज़रिए शिव के सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाया।

8. यजुर्वेद रुद्रासूक्त मंत्र -01-16

नटराज की मूर्ति की उत्पत्ति, तमिलनाडु के चिदंबरम में हुई थी। चोल राजवंश के समय में नटराज की मूर्तियां बनाई गईं। चोल राजवंश में कला रूपों का बहुत प्रसार हुआ था, खास तौर पर धातुकर्म में। चोलों के समय बनी तांबे की मूर्तियों को दुनिया की सबसे बेहतर मूर्तियां माना जाता है। नटराज की मूर्ति में शिव को ब्रह्मांड में सभी गतिविधियों का स्रोत के रूप में दिखाया गया है।

नटराज की मूर्ति में शिव की कई विशेषताएं होती हैं। नटराज की मूर्ति में शिव के उलझे बाल की लटें बहने वाली धाराएं गंगा नदी के प्रवाह का प्रतिनिधित्व करती हैं। नटराज की मूर्ति में शिव के एक कान में नर और दूसरे में मादा अलंकरण है। नटराज की मूर्ति में शिव के चारों ओर एक सर्प कुंडली की स्थिति में बैठा हुआ है।

मूर्ति का निर्माण-

नटराज की सबसे पुरानी स्वतंत्र पत्थर की मूर्तियाँ चोल रानी सेम्बियन महादेवी द्वारा बनाई गई थीं। नटराज ने विशेष महत्व प्राप्त किया और तमिलनाडु में राजसीपन का प्रतीक बन गए। 28 फीट के नटराज मूर्ति को भी इसी विधि का पालन करके बनाया गया है। यह एक समय-परीचलित विधि थी, जिसका उपयोग चोल शासन के दौरान किया जाता रहा है। मूर्तिकार सबसे पहले एक मोम का मॉडल बनाते हैं और उसे मिट्टी में लपेट देते हैं। मिट्टी को सूखने देने के बाद पिघले हुए मोम को निकालने के लिए इसे गर्म किया जाता है। नटराज की मूर्ति को लॉस्ट वैक्स तकनीक से बनाया गया था। यह तकनीक चोल काल की है। इस तकनीक में मूर्तिकार सबसे पहले मोम का मॉडल बनाते हैं और उसे मिट्टी में लपेट देते हैं। मिट्टी को सूखने देने के बाद पिघले हुए मोम को निकालने के लिए इसे गर्म किया जाता है। नटराज की मूर्ति, शिव आनंद तांडव (आनंद का नृत्य) करते हुए दिखती है। यह नृत्य तीन चीजों को दर्शाता है- ब्रह्मांड का निर्माण, रखरखाव, और विनाश। नटराज की मूर्ति, शैव धर्म के सभी प्रमुख मंदिरों में चित्रित की गई है।

नटराज शिव का एक पैर उठा हुआ है, जो गतिशीलता और मोक्ष का प्रतीक है। इसका अर्थ कि भगवान शिव के चरणों में ही मोक्ष है। नटराज के चारों ओर अग्नि इस ब्रह्मांड का प्रतीक है। भगवान शिव के इस नृत्य रूप को नटराज (नृत्य का राजा) कहा जाता है। शिव द्वारा किया जाने वाला नृत्य तांडव कहलाता है। जब इसे खुशी के साथ किया जाता है, तो इसे आनंद तांडव कहा जाता है। हिंसक मूड में किया जाने वाला यह नृत्य रुद्र तांडव कहलाता है।¹⁰

प्रतिमा निर्माण की लुप्त मोम विधि: Vanish Wax Method

नई दिल्ली के भारत मंडपम में रखी गई नटराज की मूर्ति जिन मूर्तिकारों ने बनाई, उनका वंश चोलों से 34 पीढ़ी पहले का है। इस्तेमाल की जाने वाली क्राफ्टिंग प्रक्रिया पारंपरिक 'लुप्त मोम' कास्टिंग विधि है,

9. <https://hi.wikipedia.org/wiki>

10. बाल्मीकि रामायण, उत्तररामचरित, रुद्रष्टाध्यायी, स्तोत्ररत्नावली पृष्ठ - 33

जो चोल युग की है। लुप्त मोम विधि कम-से-कम 6,000 वर्ष पुरानी है, मेहरगढ़, बलूचिस्तान (पाकिस्तान) में एक नवपाषाण स्थल पर इस विधि का उपयोग करके तैयार किया गया तांबे का ताबीज लगभग 4,000 ईसा पूर्व का है। विशेष रूप से मोहनजोदड़ो की नर्तिका को भी इसी तकनीक का उपयोग कर तैयार किया गया था। इस विधि में एक विस्तृत वैक्स मॉडल बनाना, उसे जलोढ़ मिट्टी से लेप करना, वैक्स को जलाने के लिये गर्म करना और साँचे को पिघली हुई धातु से भरना शामिल है। चोलों ने विस्तृत धातु की मूर्तियाँ बनाने के लिये लुप्त मोम विधि में उत्कृष्टता हासिल की हुई थी। इस तकनीक का उपयोग सहस्राब्दियों से जटिल मूर्तियाँ बनाने के लिये किया जाता रहा है।

शिव की सोलह मूर्तियाँ में नटराज -

सुखासनं विवाहं चाप्युमास्कन्दं परं तथा ॥४३॥ वृषारूढं पुरारिं च नृतं वै चन्द्रशेखरम् ।
अर्धनारिं च विष्णवर्धं चण्डेशानुग्रहं परम् ॥४४॥ कामारिं कालनाशं च दक्षिणामूर्तं
भिक्षाटनं मुखलिङ्गं लिङ्गसम्भूतरूपकम् ॥४५॥ षोडशप्रतिमाकारं वक्ष्येऽहं विधिना
क्रमात् ।¹¹

वास्तुशास्त्र में महेश्वर की सोलह प्रकार की मूर्तियों वर्णित हैं। जो इस प्रकार हैं- सुखासन, विवाह, उमास्कन्द, वृषारूढ, पुरारि, नृत (नटराज), चन्द्रशेखर, अर्धनारी, विष्णवर्ध, चण्डेशानुग्रह, कामारि, कालनाश, दक्षिणामूर्ति, भिक्षाटन, मुखलिङ्ग एवं लिङ्गसम्भूत।।

शिव की नटेश्वर मूर्ति का लक्षण-

शिव की नटेश्वर प्रतिमा का लक्षण है। शिव का यह रूप अपस्मार प्रसंग का है। इसमें वटवृक्ष के नीचे शिव को नृत्य करते दिखाया जाता है। अगस्त्य कहते हैं- अव्यक्त युग के होने पर भगवान् शिव नट भाव (आरभटः नाट्य की शैली) को धारण करते हैं। इस रूप में उनके साथ नन्दी इत्यादि गण और भूत, किन्नर, यक्ष आदि भी होते हैं-

अव्यक्तयुगसम्प्राप्ते नटमारभते शिवः । नन्द्यादिगणसंयुक्तो भूतकिन्नरयक्षकैः॥¹²

इसके अतिरिक्त नटेश्वरमूर्ति के लक्षण प्रस्तुत करते हुए सकलाधिकार ग्रन्थ में कहते हैं कि आठों लोकपाल, सिद्ध, अपनी पत्नियों सहित ऋषिगण, स्कन्द और विघ्नेश(विनायक) अपने-अपने वाहन पर सवार होकर रहते हैं-

लोकपालष्टसिद्धैश्च ऋषिभिर्मिथुनैस्तथा । स्कन्देशश्चापि विघ्नेशो वाहनारूढसंयुतौ॥¹³

11. मयमतम् भाग-2 प्रतिमा लक्षण अध्याय श्लोक -9

12. सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक -79

13. सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक - 80

काली, कात्यायनी और देवगणादि स्तुति का घोष करते हैं। सातों मातृकागण और बन्धुओं के साथ योगिनियां भी उनके संग होती हैं। पृष्ठभाग के आश्रय में पार्वती होती है जो अंगों में त्रिभंगी और लज्जा युक्त होती हैं। बायें भाग में उमादेवी और उसके बायें नन्दिकेश्वर होते हैं। पृष्ठभाग के आश्रय में पार्वती होती है जो अंगों में त्रिभंगी और लज्जा युक्त होती हैं। बायें भाग में उमादेवी और उसके बायें नन्दिकेश्वर होते हैं।¹⁴

चारभुजाओं और तीन नेत्रों वाले शिव होते हैं जो अपनी दो भुजाओं में वाद्यों को धारण किए होते हैं। दायें हाथ अलपल्लव के साथ होते हैं, वे हाथों से नमस्कार करते हैं। उनका श्याम वर्ण वाला अंग शोभायमान है।¹⁵

ऐसे पुरेश्वर (समस्त पुरों के स्वामी, महादेव) को वटवृक्ष के मूल में नृत करते थे, ऐसे समय में सभी देवेशों ने उनको देखा। देखने वालों में (प्रधान नागों में परिगणित) कार्कोटक भी थे।¹⁶

प्रतिमा के बिम्ब के लिए ताल-मान आदि का ग्रहण –

इस प्रतिमा के लिए ऊंचाई के प्रसंग में जैसा स्वरूप हो, उसके लिए जैसा कहा गया, वैसा ही प्रमाण ग्रहण करना चाहिए। उत्तम दशताल (124 अंगुल) और मान, उन्मान का प्रमाण सहित दुगुने अथवा छह गुना मान भी ग्रहण किया जा सकता है। इसको विशेषकर नृत के अंगों को ग्रहण करते हुए उन्नत मान के अनुसार दिखाना चाहिए।¹⁷ उष्णीष से दायें बाजू में और ललाटे के सव्यपुट के अन्तर में, हनु के दांयी ओर, हिक्का के मध्य में, नाभि के मध्य में बायें उरु के अन्तर पर, दायीं ओर स्थित, पांच के गुल्फों से और प्रभामण्डल के मध्य में ब्रह्मसूत्र को लम्बित करना चाहिए। वह हृदय, कुक्षी और उरु के ऊपर की ओर आधा अंगुल प्रमाण से होगा।¹⁸ जब दोनों हाथों को उद्वेष्टित करण में ऊपर ले जाकर घुमाया जाता है तो

14. कालीकात्यायनीचैव सुरादैः स्तुतिघोषणैः, सप्तमातृगणयुक्ते योगिनीबन्धुभिर्युते ॥

पार्वतीपृष्ठमाश्रित्य त्रिभङ्गाङ्गेन लज्जया, वामभागेहयुमादेवीः त्ववामे नन्दिकेश्वरः ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक- 81-82

15. चतुर्भुजस्त्रिणेत्रश्च द्विभुजे वाद्यधारणः, दक्षिणेन च हस्तेन अलपल्लवसंयुतः ॥

नमस्कारान्त हस्ताभ्यां श्यामवर्णाङ्गशोभितः ।

सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक- 83-84

16. वटवृक्षस्यमूले तु नृतं कृत्वा पुरेश्वरः ॥ तत्काले सर्वदेवेशो दृष्टः कार्कोटकेन तु ।

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक- 84-85

17. तुङ्गं यथोक्तभेदेषु यथायुक्तं प्रगृह्यते ॥ उत्तमे दशताले च मानोन्मानप्रमाणकम् ।

इषुद्विगुणितं वापि रसद्विगुणितं तथा ॥ नृताङ्गानि विशेषेण गृहीत्वोत्तुङ्गमानतः ।

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक- 86-87

18. उष्णीषात्सव्यपाश्वरे तु ललाटे सव्यपुटान्तरे ॥ हनोस्सव्ये तु हिक्काया मध्येनाभेश्च मध्यमे ।

'अलपल्लव' नृत्तहस्त होगा। यह उरः पार्थार्धमण्डलक्षण के अन्तर्गत होता है।¹⁹ ललाट और गुल्फ में नीत्र (गोलाई) के लिए वही आधा अंगुल मान कहा गया है। उस सूत्र से डोल के बाहर आगे की ओर का प्रमाण साढ़े सोलह अंगुल होगा।²⁰ उससे दूसरी बाहु तक चार मात्रा प्रशस्त होती है। सूत्र से ही (हाथ में धारित) अग्निशिखा के अन्त तक 40 अंगुल का प्रमाण रखना होगा।²¹

प्रतिमा कि बाहु आदि का प्रमाण -

बाहु की सीमान्त ऊंचाई दायें बाहु की सीमा तक होगी। यह बीस अंगुल होगा। सूत्र प्रमाण से हाथ में डमरु नामक वाद्य धारण करवाया जाएगा।²² इसके बाहर का प्रमाण आठ अंगुल और चालीस मात्रा का कहा गया है। यह कान की सीमा तक ऊपर उठा हुआ होगा और पूर्व में बताए सूत्र के अनुसार ही उदयमान लिए होगा।²³ मध्य भाग का अन्त चौबीस अंगुल बाहु सीमा तक होगा। इसमें समान रूप से ढाई अंगुल की वृद्धि से ऊंचाई रखी जाएगी। सूत्र से कक्षान्त तक बारह मात्रा दक्षिण पार्श्व में रखी जाएगी। बायें मध्योदर पर नौ मात्रा अपने बाहरी भाग में होगी।²⁴ इसी प्रकार सूत्र से कुंचित जानु के लिए 19 अंगुल का मान ग्रहण करें। नीत्र (गोलाई) छह अंगुल प्रमाण से बायें जानु के अन्तर पर व आगे ऊंचाई रखी जाएगी।²⁵ नलका और एडी के अन्तर को चौदह मात्रा और तीस अंगुल प्रमाण से रखा जाएगा। इकतीस अंगुल के प्रमाण से पांच को उठा हुआ दिखाया जाएगा। जानु की ऊंचाई भी उसके समान ही (उसके ऊपर रखा) हो।²⁶ उस जानु (घुटने)

वामोरोरन्तरेसव्यस्थित पादस्यगुल्फके ।। प्रभामण्डलमध्ये तु लम्बयेत् ब्रह्मसूत्रकम् ।
स्पृशेच्च हृदयं कुक्षेरुर्ध्वमर्धाङ्गुलं भवेत् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक- 87 - 89

19. अलपल्लवयोर्लक्षणम् - करावुद्वेष्टिताग्रौ च प्रविधायालपाल्नावौ । - नाट्यशास्त्रम् 9, 199

20. ललाटगुल्फनीनं स्यात् तत्सूत्रान्मानमुच्यते । तत्सूत्रात् डोलबाहवग्रं षोडशार्धाङ्गुलं भवेत् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक- 290

21. तस्मादपरबाहवन्तं चतुर्मात्रं प्रशस्यते । सूत्रादग्निशिखाग्रान्तं साष्ट (षष्ठ)पञ्चदशाङ्गुलम् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक- 291

22. बाहुसीमान्तमुत्सेधं दक्षिणेबाहुसीमकम् । विंशाङ्गुलं भवेत्सूत्रं डमरुकोद्धृतहस्तकात् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक- 292

23. बाह्यमष्टाङ्गुलं प्रोक्तं चत्वारिंशतिमात्रकम् । कर्णसीमोद्धृतं तुङ्गं सूत्रात्पूर्वोदयस्य तु ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक- 293

24. मध्यन्तु चतुर्विंशत्यङ्गुलं बाहुसीमकम् । समं द्वयर्धाङ्गुलमद्वित्रवृद्धाङ्गुलोच्छ्रयं भवेत् ॥

सूत्रात्कक्षान्तं द्विषणमात्रं दक्षिणपार्श्वके । वामे मध्योदरं त्रिन्निमात्रं स्वबाह्यदेशके ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक- 294-295

25. नवाधिकदशाङ्गुल्यं सूत्रात्कुञ्चितजानुके । नीद्रं षडङ्गुलश्चोर्ध्ववामजान्वन्तरं पुरे ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-296

26. मनु मात्रं त्रिंशदङ्गुल्ये नलकापाष्णिकान्तरम् । एकत्रिंशाङ्गुलं पादोद्धृतं जानूर्ध्वतत्समम् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-297

से नाभि सीमा की ऊंचाई के समान, ढाई अंगुल अधिक प्रमाण रखना चाहिए। डोल हस्त का अन्तर नाभिसूत्र से बारह मात्रा होगा।²⁷ उक्त अन्तर ग्यारह अंगुल भी हो सकता है। मणिबन्ध का प्रमाण दस अंगुल होगा अथवा नौ अंगुल के प्रमाण से महादेव के नीचे तक किया जाएगा।²⁸ यहां दोनों ही पक्षों का अन्तर नौ मात्रा अथवा आठ अंगुल का होगा। अन्य अंगादि की रचना के लिए जैसा प्रमाण कहा गया है, सुन्दरता के लिए ग्रहण किया जा सकता है।²⁹ पांच से लेकर पट्टहार पत्र पर्यन्त ऊंचाई अठारह अंगुल रखी जानी चाहिए। इसको दो या तीन अंगुल हीन भी रखी जा सकती है। जैसा सुन्दर दिखाई देता हो, वैसा विस्तार किया जाना चाहिए।³⁰

नटेश्वर के शृङ्गार आभूषण -

उनको बिखरे हुए जटाजूट के भार सहित और मुख पर कदाचित मुस्कान दिखाई जानी चाहिए। उनको सारे शरीर में भस्म मले हुए दिखाएं। अंगों को भस्माभस्म के समान ही दिखाया जाएगा।³¹ महादेव को नागेश्वर, गङ्गा, कमल पुष्प, और मत्तपुष्पों की शोभा में विराजित करें। उनका चेहरा हास्य रस लिए हो। वे करोटीरत्नबन्ध(कपाल का कटोरा) लिए हुए हों।³² उनके सिर पर बायीं ओर बालचन्द्रमा कहा गया है। वे रत्नों के साथ पूरित हों। सिन्दूर से भूषित उरु पर अक्षमाला लटकती दिखाई जाएगी।³³ वे व्याघ्र का चर्म धारण किए हुए हों, डोल बाहर की ओर का बन्धन हों। व्याघ्रचर्म या बाघम्बर धारण किए हों। पांवों में रत्नों सहित पादजाल होंगे।³⁴ उनके हाथ में कटक (कड़ा) होगा। कटिसूत्र, पत्रकेयूर जैसे आभूषण धारण करवाए जाने चाहिए। इसी प्रकार सांपों के वलय होंगे। प्रकोष्ठ या पेट को आगे दायीं ओर निकला हुआ दिखाया जाएगा

27. तज्जानुनाभिसीमोर्ध्वसमं द्वयर्धाङ्गुलाधिकम् । डोलहस्तान्तरं नाभिसूत्रात् द्वादशमात्रकम् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-298

28. एकादशाङ्गुलं वापि मणिबन्धाद्दशाङ्गुलम् । नवाङ्गुलं वा कर्तव्यं अधस्तादेव तस्य तु॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-299

29. अ (उ!) भय द्यन्तरं त्रिभिर्मात्रं वाष्टाङ्गुलेन तु । अन्यानुक्त प्रमाणिनि यथासुन्दरमाचरेत् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-300

30. पादात्पट्टहारपत्रं स्यात् तुङ्गमष्टादशाङ्गुलम् । द्वित्र्याङ्गुलहीनं वा यथाशोभं तु विस्तरम् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-301

31. नागगङ्गामब्जपुष्पैश्च मत्तपुष्पैर्विराजितम् । हास्यवक्त्रसमायुक्तं करोटीरत्नबन्धयुक् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-302

32. नागगङ्गामब्जपुष्पैश्च मत्तपुष्पैर्विराजितम् । हास्यवक्त्रसमायुक्तं करोटीरत्नबन्धयुक् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-303

33. वामेबालशशीप्रोक्तः रत्नपूरिमसंयुतः । सिन्दूराङ्कृतोरस्थमक्षमालावलम्बितम् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-304

34. व्याघ्रचर्म क्रियाधारं डोलबाह्याग्रबन्धयुत् । व्याघ्रचर्माम्बरधरं पादजालं सरत्नकम् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-305

॥³⁵ वे प्रसन्न मुख युक्त होंगे, खुली हुई चमकदार आंखों वाले होंगे। रत्नजटित अंगुठियां धारण किए और रत्नों के हार से सुशोभित होंगे। उसकी देहरचना इसी विधि से बनाई जाएगी अथवा उनको उपग्रीव से भी शोभित किया जाएगा।³⁶ उनका दायां पांव आगे निकला हुआ और अपस्मार के ऊपर अवस्थित होगा। श्याम आभा वाले केश भयंकर रूप से दिखाए जाएंगे। उनके बायें हाथ में फणीन्द्र या नागेश्वर होगा, दायें हाथ में उनकी (विशिष्ट नृत्य) मुद्रा होगी।³⁷ देवांगुल प्रमाण से उनकी लम्बाई को अठारह अंगुल रखा जाएगा। इस प्रकार नटेश्वर देव का बिम्ब न्यास किया जाएगा जो सभी विचक्षण जनों को मोहित करने वाला होगा।³⁸

दुनिया की सबसे ऊंची नटराज प्रतिमा- नई दिल्ली के प्रगति मैदान में स्थापित की गई थी, जो 9 और 10 सितंबर को आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन का स्थल था। यह मूर्ति, जो नृत्य करते हुए हिंदू भगवान शिव का प्रतिनिधित्व करती है, 27 फीट ऊंची है। नटराज की यह प्रतिमा अष्टधातु से बनाई गई है और दुनिया में सबसे ऊंची मूर्ति है। नटराज को भगवान शिव का रूप माना जाता है। मान्यता है कि भगवान शिव इस रूप में तांडव नृत्य की एक मुद्रा में हैं। यह मूर्ति 27 फीट ऊंची और 18 टन वजनी है। भगवान नटराज के पैरों के नीचे जो दानव दबा रहता है उसका नाम है "अपस्मार"। एक कथा के अनुसार अपस्मार एक बौना राक्षस था, जो स्वयं को सर्वशक्तिशाली एवं दूसरों को हीन समझता था। उसे वरदान प्राप्त था कि वो अपनी शक्तियों से किसी की भी चेतना का हरण कर सकता था। अपनी इसी शक्ति के बल पर अपस्मार सभी को दुःख पहुंचाता था।

नटराज स्वरूप के उपासक

यह एक लोकप्रिय नृत्य रूप है जिसे विशेष रूप से भक्तों द्वारा पवित्र माना जाता है। विशेष रूप से वे भक्त जो किसी न किसी कला और संस्कृति से जुड़े होते हैं, वे नटराज को पवित्र मानते हैं और उनके आशीर्वाद के लिए इस रूप की पूजा करते हैं। प्रतीक रूप - सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं संहार के अधिपति शिव हैं। त्रिदेवों में भगवान शिव संहार के देवता माने गए हैं। शिव अनादि तथा सृष्टि प्रक्रिया के आदि स्रोत

35. कटकं कटिसूत्रं च पत्रकेयूरभूषणम् । भुजङ्गवलयोपेतं सव्यपूर्वप्रकोष्ठकम् ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-306

36. प्रफुल्लाननसंयुक्त स्फुरितप्रेक्षणान्वितम् । रत्नाङ्गुलीयसंयुक्त हाररत्नोपशोभितम् ॥ ईदृग्विधं तथावापि ह्युपग्रीवोपशोभितम् ।

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-307

37. दक्षिणेनाग्रपादेन अपस्मारोपरिस्थितम् ॥ 308 ॥ श्यामाभोरत्नकेशस्तु भीतरुपाकृतिर्भवेत् ।

वामहस्ते फणीन्द्रेण दक्षिणे तस्य मुद्रया ॥

- सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-

308

38. देवाङ्गुलेन तद्दीर्घं च षट्त्रयंशाङ्गुलं भवेत् । एवन्नटेश्वरं देवं शेषमूह्यं विचक्षणैः ॥ - सकलाधिकार, नटेश्वरलक्षणाधिकार, श्लोक-309

हैं और यह काल महाकाल ही ज्योतिषशास्त्र के आधार हैं। शिव का अर्थ यद्यपि कल्याणकारी माना गया है, लेकिन वे हमेशा लय एवं प्रलय दोनों को अपने अधीन किए हुए हैं।

वास्तुशास्त्र में नटराज की मूर्ति का उपयोग- नटराज की मूर्ति को घर में ईशान कोण (उत्तर-पूर्व दिशा) में रखना चाहिए। इसे किसी ऊँचे स्थान या टेबल पर रखना चाहिए। साथ ही, मूर्ति के आस-पास की चीज़ों का ध्यान रखना चाहिए।

घर में नटराज मूर्ति उपयोग में ध्यान रखने योग्य बातें-

नटराज की मूर्ति को शो-पीस के तौर पर ही रखना चाहिए। इसकी पूजा प्राणप्रतिष्ठा आदि नहीं की जानी चाहिये। मूर्ति के आस-पास भारी सामान या बहुत ज़्यादा सामान नहीं होना चाहिए। मूर्ति के आस-पास चमड़े से बनी कोई चीज़ नहीं होनी चाहिए। मूर्ति को साफ़-सफ़ रखें और उसे प्रतिदिन फूलों से सजाएं। महीने में कम से कम एक बार (खासकर प्रदोष के दौरान) मूर्ति को पवित्र स्नान कराएं।

नटराज की मूर्ति को घर में रखने से जुड़ी मान्यताएं:

नटराज भगवान शिव का रौद्र रूप है। नटराज भगवान शिव के क्रोध का प्रतीक है। नटराज की मूर्ति घर में रखने से घर में क्लेश और अशांति फैलती है। नटराज की मूर्ति घर में रखने से असुरक्षा की भावना आती है।

शिव तांडव में रस और मुद्रा- नटराज रूप में शिव को ताण्डव नृत्य करते हुए निरूपित किया जाता है। नाट्यशास्त्र में ताण्डव नृत्य के विभिन्न पक्ष प्रस्तुत किये गये हैं। 'ताण्डव' शब्द कुछ अन्य अर्थों में भी प्रयुक्त होता है। भारतीय संगीत में चौदह प्रमुख तालभेद में तांडवीय ताल भी है जो वीर रस तथा तथा वीभत्स रस के सम्मिश्रण से बना है। नटराज की सुंदर लेकिन शक्तिशाली मुद्रा भरतनाट्यम नृत्यकला में एक आधारभूत तत्व के रूप में काम करती है। नर्तक उनके सहज और लयबद्ध आंदोलनों को मूर्त रूप देने का प्रयास करते हैं, अपने प्रदर्शन के माध्यम से ब्रह्मांडीय नृत्य को जीवंत बनाते हैं। नटराज मंदिर की सबसे अनूठी विशेषता नटराज की आभूषणों से सजी छवि है। मंदिर में पाँच मुख्य हॉल या सभाएँ हैं, जिनके नाम हैं कनक सभा, चित सभा, नृत्य सभा, देव सभा और राज सभा। नटराज भगवान शिव के सबसे महत्वपूर्ण रूपों में से एक है। चिदंबरम भी देश में भगवान शिव के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है।

चिदंबरम का नटराज मंदिर-

यह मंदिर चिदंबरम , तमिलनाडु , चेन्नई से लगभग 250 किलोमीटर भारत में स्थित है यह मंदिर 11वीं सदी में बनाया गया है। यह मंदिर तकरीबन 40 एकड़ में फैला हुआ और द्रविड़ संस्कृति को बताता नजर आता है मंदिर पर नृत्य की 108 कलाओं को दर्शाया गया है नटराज मंदिर को दक्षिण भारत का सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध शिव मंदिर कहते हैं।

नटराज मूर्ति

नटराज की मूर्ति कई जगहों पर मिली हैं, जैसे कि राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में चोल कांस्य की गैलरी में नटराज की मूर्ति है। यह मूर्ति मध्यकालीन युग की है। दिल्ली के प्रगति मैदान में बने भारत मंडपम में अष्टधातु से बनी नटराज की मूर्ति है। यह दुनिया की सबसे ऊंची नटराज की मूर्ति है। अमेरिका के न्यूयॉर्क एशिया सोसाइटी संग्रहालय में नटराज की मूर्ति है। यह मूर्ति तंजावुर के वेदपुरेश्वर मंदिर से चोरी हुई थी। आस्ट्रेलिया की एडिलेड स्थित ऑर्ट गैलरी ऑफ साउथ ऑस्ट्रेलिया में नटराज की मूर्ति थी। यह मूर्ति तिरुनेलवेली ज़िले के कालिदाईकुरिची से चोरी हुई थी। हड़प्पा में पत्थर की बनी नृत्य करते हुए पुरुष की मूर्ति मिली है। इसे नटराज कहा जाता है। नटराज: शिव का एक महत्वपूर्ण रूप सृष्टि की प्रचुरता का प्रतीक है। सृष्टि का नृत्य, जिसने स्वयं की रचना हमेशा रहने वाली स्थिरता में से की। चिदंबरम में जो खड़ा है वो नटराज बहुत ही प्रतीकात्मक है क्योंकि आप जिसे चिदंबरम कहते हैं वो सम्पूर्ण स्थिरता, शांति है। इस मंदिर के रूप में यही बात प्रकट की गयी है।

पंचमुखी शिव का रहस्य और महत्व- शिव के 5 रूप हैं। इन पाँच मुखों के नाम हैं: सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष, और ईशान। और 11 रुद्रावतार हैं। शिव के ग्यारह अवतार- कपाली, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, आपिर्बुध्य, शम्भू, चण्ड तथा भव है। **शिवजी के 19 अवतार भी हैं** लेकिन बहुत कम लोग होंगे जो, शिव के अवतारों के बारे में जानते हैं। शिवजी ने कुल 19 अवतार लिए हैं। वीरभद्र, पिप्पलाद, नंदी अवतार, भैरव अवतार, अश्वत्थामा, शरभावतार, गृहपति, ऋषि दुर्वास, हनुमान जी, वृषभ, यतिनाथ, कृष्णदर्शन, अवधूत, भिक्षुवर्य, सुरेश्वर, किरात, ब्रह्मचारी अवतार, सुनट नतर्क और यक्ष अवतार।

शिव की 5 शक्तियां- शिव सृष्टि के आरंभ में इन पांच शक्तियों को मुक्त करते हैं और प्रलय के समय उन्हें वापस अपने भीतर ले लेते हैं। बीच-बीच में वे इन ऊर्जाओं को सृजन (सृष्टि), संरक्षण (स्थिति), संहार (विनाश या परिवर्तन), छिपाव (तिरोभाव) और प्रकटीकरण (अनुग्रह) के उद्देश्यों के लिए उपयोग करते हैं।

नटराज की प्रसिद्ध मूर्ति किस कला से संबंध- भारत में तमिलनाडु के चिदंबरम स्थित नटराज मंदिर में नटराज की प्रतिमा को भरतनाट्यम की 108 मुद्राओं में नाट्य शास्त्र के संस्कृत शिलालेखों के साथ प्रदर्शित किया जाता है। नई दिल्ली के भारत मंडपम में G-20 देशों के शिखर सम्मेलन में 27 फुट की नटराज की शानदार मूर्ति प्रदर्शित की गई, जो भगवान शिव के नृत्य रूप में विश्व की सबसे ऊँची मूर्ति है।

भारत मंडपम में प्रदर्शित नटराज प्रतिमा की मुख्य विशेषता-

तमिलनाडु के कारीगरों द्वारा अष्टधातु (आठ धातु मिश्र धातुओं) से तैयार की गई नटराज की इस उल्लेखनीय मूर्ति का वजन 18 टन है। इस मूर्ति को तमिलनाडु के प्रसिद्ध मूर्तिकार स्वामी मलाई के राधाकृष्णन स्टापति ने बनाया है। इस नटराज प्रतिमा के डिज़ाइन निर्माण में तीन प्रतिष्ठित नटराज मूर्तियों से प्रेरणा ली गई है: चिदंबरम में थिल्लई नटराज मंदिर, कोनेरीराजपुरम में उमा महेश्वर मंदिर और तंजावुर में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, बृहदेश्वर(बड़ा) मंदिर। यह भगवान शिव के नृत्य रूप के इतिहास और धार्मिक प्रतीकवाद में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। भारत मंडपम में नटराज की मूर्ति लुप्त मोम विधि का उपयोग करके बनाई गई है।

नटराज स्वरूप का प्रादुर्भाव:

नर्तक के रूप में शिव, जिन्हें नटराज के नाम से जाना जाता है, की अवधारणा ने 5वीं शताब्दी ईस्वी के आसपास आकार लेना शुरू किया। शिव के नृत्य के शुरुआती चित्रणों ने नटराज रूप से जुड़े बहुआयामी प्रतीकवाद की नींव रखी।

चोल साम्राज्य में शिव:- चोल राजवंश (9वीं-11वीं शताब्दी) के शासनकाल के दौरान शिव के नटराज रूप का महत्वपूर्ण विकास हुआ। कला और संस्कृति के संरक्षण के लिये प्रसिद्ध, चोलों ने नटराज के सांस्कृतिक महत्व को आयात देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चोल कट्टर शैव थे, जो भगवान शिव की पूजा पर बल देते थे। उन्होंने अपने पूरे क्षेत्र में भव्य शिव मंदिरों का निर्माण कराया, जिसमें तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर एक प्रमुख उदाहरण है। उनकी मूर्तियों में शैव आकृतियों पर विशेष ध्यान दिया गया है।

नटराज प्रतिमा का विकास:- चोलों के शासनकाल में नटराज का प्रतीकवाद और अधिक जटिल हो गया। भगवान शिव पुराणों में एक असाधारण देवता हैं, जो विनाशकारी और तपस्वी दोनों गुणों के प्रतीक हैं। 'नृत्य के भगवान' नटराज को उनके 108 विविध नृत्यों के लिये पूजा जाता है। नृत्य करते हुए शिव जीवन के द्वंद्वों को मूर्त रूप देते हुए सृजन और विनाश दोनों से जुड़े हुए हैं। इस नृत्य को एक लौकिक नृत्य माना जाता है, जिसमें शिव लौकिक नर्तक के रूप में और संसार एक मंच के रूप में था।

नटराज के प्रतिष्ठित तत्त्व: प्रतिष्ठित अभ्यावेदन में नटराज को एक ज्वलंत ऑरियोल या प्रभामंडल के भीतर चित्रित किया गया है, जो संसार के चक्र का प्रतीक है। उनकी लंबी, बिखरी हुई जटाएँ उनके नृत्य की ऊर्जा और गतिशीलता को दर्शाती हैं। नटराज को आमतौर पर चार भुजाओं के साथ दिखाया जाता है, प्रत्येक हाथ में प्रतीकात्मक वस्तुएँ होती हैं जिनका गहन अर्थ है।

नटराज के गुणों में प्रतीकवाद: नटराज के ऊपरी दाहिने हाथ में एक डमरू है, जो सभी प्राणियों को अपनी लयबद्ध गति में खींचता है और ऊपरी बाईं भुजा में वह अग्नि को धारण करते हैं, जो ब्रह्मांड तक को नष्ट करने की उनकी शक्ति का प्रतीक है। नटराज के एक पैर के नीचे कुचली हुई बौनी जैसी आकृति है, जो भ्रम और सांसारिक विकर्षणों का प्रतिनिधित्व करती है। अलंकरण में शिव के एक कान में नर कुंडल है, जबकि

दूसरे में नारी कुंडल है। यह नर और मादा के संगम का प्रतिनिधित्व करता है और इसे प्रायः अर्धनारीश्वर कहा जाता है। शिव की भुजा के चारों ओर एक साँप मुड़ा हुआ है।³⁹ साँप कुंडलिनी शक्ति का प्रतीक है, जो मानव रीढ़ में सुप्त अवस्था में रहती है। यदि कुंडलिनी शक्ति जाग्रत हो जाए तो व्यक्ति सच्ची चेतना प्राप्त कर सकता है।

नटराज रक्षक और आश्वस्तकर्ता के रूप में:- नटराज से जुड़े दुर्जेय प्रतीकवाद के बावजूद वह एक रक्षक के रूप में भी हैं। उनके अगले दाहिने हाथ से बनाई गई 'अभयमुद्रा' (भय-निवारण संकेत) भक्तों को आश्वस्त करती है, भय और संदेह से सुरक्षा प्रदान करती है।⁴⁰ नटराज के उठे हुए पैर और उनके अगले बाएँ हाथ का संकेत उनके पैरों की ओर इशारा करते हुए भक्तों को उनकी शरण में आने के लिये प्रेरित करते हैं। नटराज की प्रतिमा की विशिष्ट विशेषताओं में से एक उनकी हमेशा से मौजूद व्यापक मुस्कान है। फ्राँसीसी इतिहासकार रेनी ग्राउसेट ने नटराज की मुस्कान को "मृत्यु और जीवन, खुशी तथा दर्द दोनों" का प्रतिनिधित्व करने वाले के रूप में खूबसूरती से वर्णित किया है।

निष्कर्ष

नटराज केवल एक धार्मिक प्रतीक ही नहीं, बल्कि नृत्यकला और वास्तुशास्त्र के गहरे सिद्धांतों से भी जुड़ा हुआ है। यह प्रतिमा ब्रह्मांड की अनंत लय, सृजन और विनाश के सिद्धांतों को दर्शाती है। भारतीय नृत्य और स्थापत्य कला में नटराज का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस प्रकार, नटराज, नृत्यकला और वास्तुशास्त्र के गहरे संबंध को समझना भारतीय कला, संस्कृति और विज्ञान की समृद्धि को जानने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

शास्त्रीय एवं साहित्यिक सन्दर्भ ग्रंथ

1. **सकलाधिकार** : विशेष रूप से 'नटेश्वरलक्षणाधिकार' अध्याय, जिसमें प्रतिमा के लक्षणों और माप का विस्तृत विवरण है।
2. **मयमतम्** : इसके द्वितीय भाग (प्रतिमा लक्षण अध्याय) से उद्धरण लिए गए हैं।
3. **नाट्यशास्त्र (भरत मुनि)** : नृत्य की मुद्राओं (जैसे अलपल्लव) के शास्त्रीय आधार हेतु।
4. **यजुर्वेद (रुद्राष्टाध्यायी/रुद्रसूक्त)** : भगवान शिव के रुद्र स्वरूप और उनकी शक्तियों के वर्णन के लिए।

39. यजुर्वेद रुद्रासूक्त मंत्र -1-65

40. यजुर्वेद रुद्रासूक्त मंत्र -1-35

5. नन्दिकेश्वर काशिका : माहेश्वर सूत्रों की उत्पत्ति के संदर्भ में।
6. वाल्मीकि रामायण : उत्तररामचरित प्रसंग के संदर्भ में।
7. स्तोत्ररत्नावली : शिव स्तुति और उनके विभिन्न स्वरूपों के लिए।

ऐतिहासिक एवं कलात्मक संदर्भ ग्रंथ

8. चोल कालीन इतिहास : चोल राजवंश (9वीं-11वीं शताब्दी) की मूर्तिकला और 'लुप्त मोम' (Lost Wax) विधि के ऐतिहासिक संदर्भ।
9. रेनी ग्राउसेट (René Grousset) : फ्रांसीसी इतिहासकार, जिन्होंने नटराज की मुस्कान और प्रतीकवाद की व्याख्या की है।
10. भारतीय पुरातत्व एवं संग्रहालय रिकॉर्ड : नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय और भारत मंडपम में स्थापित प्रतिमाओं के विवरण।